इस मास में विशेषः साधना दीक्षा

पितृेश्वर मुक्ति दोष निवारण साधना

पौष अमावस्या - 19 दिसम्बर

जब घर परिवार में कलह का बीज पड़ जाता है तो **परिवार** में किसी भी व्यक्ति की **उन्नति** नहीं हो पाती, हर समय **आशंका, संदेह, रोग, शोक, अकाल मृत्यु** और **अविश्वास** का वातावरण ही बना रहता है। इसका मूल कारण है **''पितृ दोष''**, जो **अतृप्त आत्माएं** आपके **परिवार** का **अंग** थी। आपके **पूर्वज** थे जो मुक्त होने के लिये **छटपटा** रहे हैं। इन्हीं **कुस्थितियों** के **निवारण** व **पितरों की शांति-मुक्ति** के लिये उक्त **साधना** सहायक है।।

तेजस्वी पुत्र प्राप्ति प्रयोग

पौष पुत्रदा एकादशी - 30 दिसम्बर

पौष माह में **सूर्य उपासना** से **महत्त्वपूर्ण** व **सुश्रेष्ठ लाभ** प्राप्त होता है। अतः **पुत्रदा एकादशी पर्व** पर **पुत्र प्राप्ति** व अपनी **संतान** को **सूर्य तेजस्वीमय** बनाने हेतु इस प्रयोग से शीघ्र कामना पूर्ति होती है और **संतान सूर्य के समान तेजस्वी, बल-बुद्धि, ज्ञान, आत्मविश्वास स्वाभिमान, आरोग्यता** से युक्त होती है, साथ ही **संतान** में **सुसंस्कार, आज्ञाकारी, उच्च शिक्षा, कर्मशील** आदि **सद्गुणों** में **वृद्धि** होती है।

पाप मोचनी कर्ण पिशाचिनी साधना

कालाष्टमी - 10 जनवरी

कर्ण पिशाचिनी अपने **साधको** का हर **क्षण** ध्यान रखती है, उसके जीवन में आने वाले प्रत्येक **संकट** का पूर्व में ही **आभास** करा देती है। जिससे **साधक** और **उसका परिवार** किसी **घटना-दुर्घटना** में **पूर्ण सुरक्षा** प्राप्त करने में **सफल** होता है। साथ ही **कर्ण पिशाचिनी** का **विशिष्ट रूप** साधक के सभी **पाप-ताप, संताप, कुकर्म दोषों** को अपने **उग्र स्वरूप** से **भस्मीभूत** कर देती है, यही नहीं अपने **साधक** को सभी **सत्कर्म** की ओर **अग्रसर** करती है। जिससे निरंतर **जीवन** में **श्रेष्ठता** आती ही है।

नवग्रह शांति सर्व लाभ प्राप्ति साधना

मौनी अमावस्या - 18 जनवरी

वर्तमान जीवन में क्यों **समस्यायें** इतनी अधिक **भीषण** और **कष्टकारी** हो गयी हैं, **धोखा-धड़ी, रोगो में वृद्धि, असफलता, मानसिक अशांति** इत्यादि **घटनायें** तो प्रत्येक व्यक्ति के **जीवन का अंग** ही बन चुकी है। इन सबका **मूल कारण** ग्रहों की उपेक्षा ही है। इसलिये व्यक्ति प्रत्येक कार्य में **नवग्रह पूजन** आवश्यक रूप से करता ही है, क्योंकि **नवग्रहों की अनुकम्पा** से ही जीवन में **सुस्थितियों** का **निर्माण** होता है, जिससे **साधक** अपनी सभी **मनोकामनायें** पूर्ण करने में **सक्षम** होता है।

साधना एक **साधक** के जीवन का **अभिन्न अंग** है, जो साधक समय-समय पर स्वयं व सामूहिक रूप से साधना सम्पन्न करते हैं, वे सदैव **सद्गुरूदेव** के **हृदय** में एक **विशिष्ट स्थान** प्राप्त करते हैं। ये **विशिष्ट साधनायें** सम्पन्न करने के लिए **कैलाश सिद्धाश्रम** में सम्पर्क करें।